विकास की लहरों में छिपी विनाश की सुनामी

सईद अहमद

औरंगाबाद, २३ अप्रैल. इको नीड्स फाउंडेशन के मंच से जल प्रदूषण की गंभीरता पर शोध अभियान चलाने, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों के आयोजन के अलावा नई पीढ़ी को पर्यावरण संवेदनशील बनाने के लिए प्रयासरत प्रा प्रियानंद आगले का कहना है कि विकास के नाम पर हमने पानी को कहीं का नहीं छोड़ा है, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि विकास की लहरों में ही विनाश की सुनामी छिपी होती है. उनका मानना है कि पर्यावरण का मूल आधार ही पानी है. इसलिए हमें जल स्त्रोतों की रक्षा करने और उनको दूषित होने से बचाने के लिए उपाय करने होंगे. जल स्त्रोत में इंजीनियरिंग की स्नातकोत्तर उपाधि लेने वाले प्रा प्रियानंद आगले राज्य में जल प्रदूषण पर काफी कार्य भी कर चुके हैं. वह कहते हैं कि उद्योग और विकास की अंधी दौड़ से जन्मे प्रदूषण ने आज पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है, जो कि चिंता का एक बड़ा कारण है. यही वजह है कि हर दिन कहीं न कहीं पर्यावरण और प्रदूषण पर चर्चाएं होती रहती हैं. पर्यावरण का मुख्य आधार वायु, भूमि और जल है. इसमें जल प्रदूषण के चलते मानव जीवन खतरे में पड़ गया है. इसके बावजूद स्वार्थी मनुष्य ने अपने तुच्छ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पूरी दुनिया के सामने जल प्रदूषण की विकट समस्या खड़ी कर दी है. पेश हैं जल प्रदूषण को लेकर प्रा आगले की 'लोकमत समाचार' के साथ हुई बातचीत के कुछ अंश...

इको नीड्स फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रा प्रियानंद आगले मानते हैं कि पर्यावरण के लिए नदियों का संवर्धन जरूरी है

प्र : एक बार फिर नदियों की सफाई को लेकर नीति बनाने की बात की जा रही है, इसको लेकर आप क्या महसूस करते हैं?

उ : नदियां सभ्यताओं की जननी हैं. मानव जीवन नदियों के किनारे ही फलता-फूलता है. सिर्फ मनुष्य ही नहीं पेड़-पौधे, जीव-जंतु भी पानी के भीतर या पानी के करीब अर्थात पानी पर आश्रित हैं. इसलिए समय-समय पर पानी को लेकर नीति बनाने अथवा परियोजना की बातें होती हैं. लेकिन, सिर्फ बातों अथवा घोषणाओं से काम नहीं चलेगा, बल्कि जमीनी स्तर पर भी काम करना होगा. लेकिन प्रशासन या सरकारें इस मामले में गंभीर नजर नहीं आतीं.

प्र : पर्यावरण प्रदूषण में जल प्रदूषण की भूमिका क्या हो सकती है?

उ : पर्यावरण संवर्धन नदियों के संवर्धन के बगैर संभव नहीं है. पानी के बगैर पर्यावरण की रक्षा की बातें ही बेमानी हैं. जीवन का आधार पानी है और हमें जितनी भी जैव विविधता नजर आती है, उसका आधार पानी है. इसलिए नदियों का संवर्धन करना बहुत जरूरी है. नदियां पानी का प्राकृतिक स्रोत होती हैं.

प्र : जल प्रदूषण के प्रमुख कारण क्या हो सकते हैं?

उ : शहरीकरण और औद्योगिकरण के चलते जल प्रदूषण की समस्या बढ़ी है. इसके अलावा खेती में बड़े पैमाने पर रासायनिक खादों के इस्तेमाल से भी जल प्रदूषण में इजाफा हुआ है. बड़े शहरों में कारखानों से निकलने वाले पानी को बगैर प्रक्रिया के बहा दिया जाता है. इस पानी में जहरीले रसायन होते हैं और यह नदियों के प्राकृतिक रूप को खत्म कर देते हैं. इसके अलावा सीवेज का पानी भी नदियों में धड़ल्ले से छोड़ा जाता है. यह पानी नदी के पानी को दूषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

प्र : प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए प्रदूषण मंडल जैसी संस्थाओं के बावजूद क्या स्थिति इतनी गंभीर है?

उ : प्रदूषण मंडल जैसी संस्थाएं सिर्फ लीपापोती का काम करती हैं. अनेक बार जब उनसे कहा जाता है कि फलां कारखाना भारी मात्रा में दूषित पानी नदी अथवा नाले में छोड़ रहा है तो

वह कह देते हैं कि संबंधित कारखाने को कहा गया है कि पानी पर उचित प्रक्रिया करे. जब कठोर कार्रवाई की बात की जाती है तो उनका टका सा जवाब होता है कि कुछ लोगों के लिए सैकड़ों लोगों की नौकरी तो नहीं छीनी जा सकती. विकास के लिए कारखाने और उद्योग तो जरूरी हैं, लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि विकास की इन लहरों में विनाश की सुनामी भी छिपी होती है. आखिर इन कारखानों का अस्तित्व भी तो जीवन से ही जुड़ा हुआ है. जीवन नहीं तो फिर कारखानों और उद्योग का क्या महत्व रह जाता है. कारखानों को चाहिए कि वे पानी पर समुचित प्रक्रिया करें तो मामला ठीक हो सकता है, इसके लिए उनका कुछ खर्च अवश्य बढ़ जाएगा, लेकिन जीवन के खतरे जरूर कम होंगे. हमें यह ध्यान में रखना होगा कि जल प्रदूषण पर आवश्यक उपाय योजना समय रहते नहीं की गई तो यह हमें कहीं का नहीं छोड़ेगी.

प्र : जल प्रदूषण के क्षेत्र में औरंगाबाद शहर की स्थिति कैसी पाते हैं आप?

उ : औरंगाबाद एक ऐतिहासिक शहर है. शहर और परिसर में खाम और सुखना नदियां बहती हैं. वहीं, पांच छोटे-बड़े तालाब हैं. लगभग तीन सौ-साढ़े तीन सौ वर्ष पुरानी बारह नहरों के अवशेष आज भी मौजूद हैं. यह सारा ढांचा वास्तव में शहर को पानी के क्षेत्र में स्वावलंबी बनाने के लिए काफी है. लेकिन, जल के प्राकृतिक और मानव निर्मित स्रोतों पर ध्यान नहीं देने से शहर आज पानी की समस्या से जूझ रहा है. तालाबों में हर्सूल को छोड़ दिया जाए तो सलीम अली तालाब सीवेज के गंदे पानी से भर गया है. वहां पर सीवेज पर प्रक्रिया के लिए जारी योजना अभी सिर्फ कागजों पर ही है. उस पर कितना काम होगा, कहा नहीं जाता. इसके अलावा आमखास, हिमायतबाग और सिडको एन-८ के नेहरू उद्यान के तालाब तो प्रायः लुप्त होने के कगार पर हैं. पिछले दिनों हमने आमखास के तालाब और नेहरू उद्यान के तालाब को साफ करने का प्रयास किया था जिसमें कुछ सीमा तक तो सफलता मिली, लेकिन प्रशासन की उदासीनता से अधिक कुछ नहीं हो सकता. यही हालत नदियों की भी है. यदि प्रशासन साथ दे तो ही उनको ठीक किया जा सकता है. वैसे भी नदी और तालाब प्रशासन के स्वामित्व में होते हैं.

प्र : दिन-ब-दिन नदियों में पानी की कमी से भी तो स्थिति बिगड़ी है?

उ : पानी कम होने के कारणों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है. सावंगी और तीसगांव परिसर के पहाड़ ही गायब होने लगे हैं. थोड़ी सी रायल्टी के बदले पहाड़ ठेकेदारों को बेच दिए जाते हैं और ठेकेदार स्वीकृत मात्रा से कई गुना अधिक पहाड़ खोद डालते हैं. यही पहाड़ बारिश के पानी को बहाकर नहरों और नदियों में लाते थे. यह क्यों नहीं सोचा जाता कि पहाड़ के पत्थरों के बगैर तो घर बन सकते हैं, लेकिन क्या दोबारा हम पहाड़ बना सकते हैं. पत्थर की जरूरत ही है तो जमीन खोदकर भी तो निकाला जा सकता है. इससे तो और भी लाभ होगा. खोदी गई जमीन पानी सोखने का काम करेगी.

प्र : क्या पानी की समस्या कृत्रिम भी है?

उ : जिस तरह से पानी बाजार की वस्तु बन गया है, उसे देखकर तो यह लगता है कि जान-बूझ कर प्राकृतिक पानी को दूषित करने का कार्य जारी है ताकि लोग पानी खरीदकर पीने की आदत डाल सके. इसके लिए पानी का बाजार खड़ा कर दिया गया है. निजी और विदेशी कंपनियों को जल स्रोत बेचे जा रहे हैं और यही कंपनियां आज एक लीटर बोतलबंद पानी १५ रुपए में बेच रही हैं.

प्र : जल प्रदूषण को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है?

उ : हमने देखा कि पुरानी पीढ़ी प्रदूषण आदि को महत्व नहीं देती. इसलिए नई पीढ़ी को सामने रखकर हम विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते हैं. बच्चों को पर्यावरण मित्र बनाने के लिए उनको प्रकृति से करीब लाने, पर्यावरण से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन आदि कार्य किए जाते हैं. इस कार्य के लिए इको नीड्स फाउंडेशन का गठन किया गया है और इसके कार्यों को यूनेस्को ने भी गंभीरता से लिया है. हमने विश्व स्तर पर ग्लोबल वॉटर पार्टनरशिप के तहत भी काम करने की योजना बनाई है.